गोवर्धन-ग्रन्थ-माला २

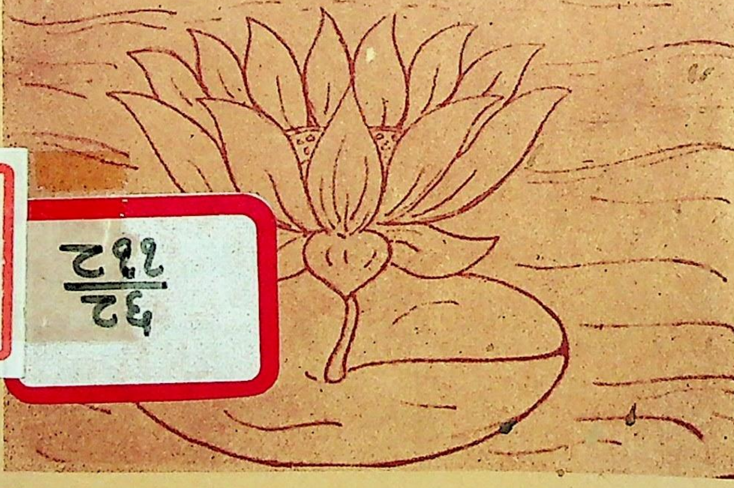
अलंकारस्य

ईश-काव्यम्

'प्रतिभा' ख्यया हिन्दी-व्याख्यया समलंकृतम्

ईशोपनिषद्

डा: सुबोध: वेदालंकार:



वितरक: मलिक एण्ड कम्पनी, जयपुर

गोवर्धन-ग्रन्थ-माला

अलंकारस्य

ईश-काव्यम्

ईशोपनिषदो

मन्त्राणां शब्दार्थेन, सुसंस्कृतपद्यानुवादेन युक्तम्

'प्रतिभा' ख्यया हिन्दी-व्याख्यया च

समलंकृतम्

प्रणेता

डा० सुभाषो वेदालंकारः

एम० ए०, पीएच० डी०, साहित्याचार्यः

प्रकाशक

अलंकार-प्रकाशन-जयपुर

अनुक्रमणिका

समर्पणम्	३
प्राक्कथनम्	४
ईश-काव्यम्	५-११
ईशोपनिषद्	१२-१६

प्रकाशकः— श्रीमती सुन्दरी देवी
अलंकार-प्रकाशन-जयपुर
७४ तनेजा ब्लाक आदर्श नगर जयपुर-४

मुद्रक :— एल. डी. कुमार. अर्जुन देव तनेजा
इन्डो-बर्मा-प्रिन्टर्स आदर्श नगर जयपुर-४

प्रथमावृति:- श्रद्धानन्द बलिदान दिवस
२३ दिसम्बर १९६९

मूल्य :— एक रुपया

कम्पोजीटर :— दुर्गासिंह चौहान

ईशकाव्यम्

कोविदाग्राणां वन्दनीय-गुरुप्रवराणाम्

डाः रामनाथ वेदालंकाराणाम्

पाद-पंकजेषु सादरं सानति

समर्पितम्

●

सेन्टस्टीफेन्स कालेजे, संस्कृत-हिन्दी-विभागाध्यक्षान्

काव्यस्य प्रेरकान्, विद्वद्वरान् भ्रातृप्रवरान्

श्री सत्यभूषण योगी महानुभावान्

प्रति आभारं प्रदर्शयन्

●

श्रद्धानन्द-बलिदान-दिवस
२३ दिसम्बर ६९

वशंवदः
सुभाषो वेदालंकारः

प्राक्कथनम्

१६६६ खीष्टाब्दस्य घटनास्ति, कल्हणस्य राजतरंगिण्यां चित्रिता भारतीय-संस्कृतिः विषये अनुसन्धान-कार्य-प्रसंगे विस्तृतां सुखदाञ्च कश्मीर-यात्रां सम्पाद्य, सितम्बर-मासे एकोन्विंशं दिनांक महं दिल्ली-नगरे अनैषम्, तस्मिन्नहनि मया श्रीमतां विदुषां 'सत्यभूषण योगी' महाभागानां दर्शनं कृतम् । वार्ताप्रसंगे भ्रातृवर्यैः 'योगी का सोऽहं-काव्य' इत्याख्यं, ईशोपनिषद्-मन्त्रेषु, विरचितं हिन्दी-काव्यं प्रदत्तम् ।

जयपुरमागत्य सुमधुरं सारगर्भितञ्च तदधीत्य, ततश्चैव प्रेरणां प्राप्य गुम्फितमिदं मया "ईशकाव्यम्" यत्र च ईशोपनिषदः मन्त्राणां शब्दार्थेन सह, तेषां भावः संस्कृत-काव्ये संगोपितः ।

प्रिय-प्रतिभायाः स्मृतौ लिखितं, 'प्रतिभा' ख्यया हिन्दी-व्याख्यया च समलंकृतं, लघुकाव्यमिदं प्रकाश्य सुरभारती-प्रियाणामध्येतॄणां करकमलेषु समर्प्यते, श्रद्धानन्द-बलिदान-दिवसे ।' 'चेत्तत् वेद-विचार-प्रचारे समर्थं स्यात्तदा सफलं स्वप्रयासं मंस्ये । संस्कृतकवितायां प्रथमोऽयं मम प्रयासो वर्तते । अतः

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः ॥

इति चिन्तयन् आशासे कोविदा वेद-भावानां संस्कृत-कवितायां प्रकाशने ममोत्साहं संवर्धयिष्यन्तीति ।

काव्यस्य त्वरया प्रकाशने प्रिय-प्रतिभा एव कारणमस्ति । मुद्रणालयस्य व्यवस्थापकानां, कर्मचारिणाञ्च सहयोगः अपि स्तुत्यः आसीत् । दिनचतुष्टये एव केवलं काव्यमिदं मुद्रितं मुद्रणालयेन, सर्वेभ्य एतेभ्यः धन्यवादान् वितरामि ।

विनीतः

सुभाषो वेदालंकारः

ईश-काव्यम्

प्रतिभाया विनम्रायाः आर्याया लिखितं स्मृतौ ।
ईशकाव्यमिदं दिव्यं प्रीतिं कीर्तिं ददातु नः ।। १ ।।

विनयशील, आर्या (श्रेष्ठ गुणयुक्त) प्रिय प्रतिभा की स्मृति में लिखा गया यह दिव्य ईश काव्य हम (लेखक व पाठकों) को प्रीति (प्रेम व आनन्द) तथा यश प्रदान करे।

लोके विलोक्यते यद्यद्वस्तुजातं चराचरम् ।
ईशेन निर्मितं व्याप्तं धारितञ्च सदैव तत् ।। २ ।।
भुञ्जतां तत्कृपाप्राप्तं वैभवं शिवकांक्षिणः ।
विहाय दुर्जयं लोभं जना दानपुरस्सराः ।। ३ ।।

अथ प्रतिभा-हिन्दी-व्याख्या

संसार में जो कुछ भी जड़-चेतन वस्तु समूह दिखाई देता है उसे ईश्वर ने बनाया है. वह उस (सब) में व्याप्त है और (उसे) धारण किये हुए है ।२। कल्याण की इच्छा करने वाले हे मनुष्यो! उस प्रभु की (अपार) कृपा से प्राप्त (धन सम्पत्ति, रूप) वैभव का दान करते हुए और दुर्जय लोभ को छोड़कर उपभोग करो ।३।

स्मारं स्मारं प्रभुं मर्त्याश्शतं वर्षाणि जीवत ।
यूयं कर्म प्रकुर्वन्तः परं नातश्शुभं क्वचित् ।। ४ ।।
वाञ्छत जीवनं जीवाः कर्मण्येव रतास्सदा ।
तत्फले च भवेन्नैव संगो वो नाप्यकर्मणि ।। ५ ।।

मनुष्यो ! ईश्वर का ध्यान करते हुए और निरन्तर कार्य करते हुए जियो । इससे अधिक कल्याणकारी और कुछ भी नहीं है ।४। प्राणियो ! निरन्तर कार्य में निरत रहते हुए ही जीने

की इच्छा (तो) करिये, (परन्तु) उस कार्य के फल में और अकर्म (निष्क्रियता) में आपकी आसक्ति नहीं होनी चाहिये ।५।

निस्संगः कुरु कर्म त्वमात्मशक्तिञ्च वर्धय ।
मा भवेरसुरो नो चेल्लोकांस्त्वमासुरान् व्रजेः ।। ६ ।।
आसुरा नाम ते लोका ये घोरतमसावृताः ।
आत्मनो विनिहन्तारस्तत्र यान्ति नराधमाः ।। ७ ।।

हे जीव ! तुम अनासक्त भाव से कार्य करो और आत्मशक्ति को बढ़ाओ, असुर मत बनो, अन्यथा आसुर-लोकों को पाओगे ।६। असुरलोक वे हैं जो भीषण कष्ट रूप अन्धकार से युक्त हैं, आत्मशक्ति का हनन करने वाले अधम कोटि के मनुष्य उन (लोकों) को प्राप्त करते हैं ।७।

आत्मैको गतिशून्योऽयं मनसोऽपि द्रुतं व्रजेत् ।
देवाश्च ज्ञानिनो नैव मेधया तद्गतिं विदुः ।। ८ ।।
अधावन् धावतो योऽन्यान् लंघते सहजं सदा ।
जलादिगतिमद्वस्तु वायुश्च तद्वशं वसेत् ।। ९ ।।

एक (अद्वितीय) यह आत्मा गतिविहीन होता हुआ भी तेज गति वाला है, देवता और ज्ञानी जन अपनी बुद्धि से (भी) उसकी गति को नहीं ज़ान पाते ।८। न दौड़ता हुआ भी यह दौड़ते हुए अन्य समस्त लोगों को आसानी से लांघ जाता है, जल आदि गतिशील पदार्थ और वायु उसके वश में रहते हैं ।९।

तिष्ठन् प्रतिष्ठते योऽसौ गच्छन्नपि च तिष्ठति ।
भुवनस्यान्तिके तस्य दूरे च वसतिस्सदा ।। १० ।।
लोकस्यान्तर्बहिश्चापि जगतोऽस्मात् स तिष्ठति ।
सूक्ष्मं स्थूलं न तद्वस्तु यत्तेन व्याप्तमस्ति नो ।। ११ ।।

बैठा हुआ भी वह (सर्वत्र) गति करता है, और गति करता हुआ भी (सर्वत्र) बैठा है, ब्रह्माण्ड के (प्रत्येक कोने के) समीप और दूर (सदा) निवास करता है।१०। इस लोक के अन्दर और बाहर (सब जगह) वह विद्यमान है, छोटी (से छोटी) और बड़ी (से बड़ी) कोई भी वस्तु ऐसी नहीं जिसमें वह व्याप्त न हो।११।

चलाचलं जगद्योऽसावात्मन्येवानुपश्यति ।
आत्मानं च जगत्यस्मिन् स नूनं मतिमान्नरः ।। १२ ।।
आत्मवत् सर्वभूतानि पश्यन् य इह जीवति ।
प्राणिभ्य आत्मनश्चापि जुगुप्सां न करोति सः ।। १३ ।।

जो चल अचल (जड़ चेतन) जगत को आत्मा में ही और आत्मा को (समस्त) जगत् में (व्याप्त) देखता (और समझता) है, वही बुद्धिमान मनुष्य है।१२। जो (मनुष्य) सब प्राणियों (और वस्तुओं) को आत्मा के (रूप में एवं उसी के) समान देखता हुआ इस लोक में जीता है, वह कभी भी प्राणियों से और आत्मा से जुगुप्सा (घृणा और ईर्ष्या) नहीं करता।१३।

आत्मैवेदं जगत्सर्वं दृश्यमानं चराचरम् ।
इत्यैक्यं यो विजानीयात् सफलं तस्य जीवितम् ।। १४ ।।
अभेदं यो विजानाति सर्वभूतेषु चात्मनि ।
नैव तस्य भवेन्मोहो नापि शोकः कथंचन ।। १५ ।।

दृश्यमान यह समस्त जड़ चेतन जगत् आत्मा ही है, इस प्रकार जो (आत्मा और जगत् में) एकता को समझे उसका जीवन सफल है।१४। जो (मनुष्य इह लोक में) आत्मा और सब (वस्तुओं एवं) प्राणियों में अभेद देखता है उसे न कभी मोह, न ही किसी प्रकार का शोक होता है।१५।

अशरीरोऽक्षतोऽपापः स्नायुजालैरपावृतः ।
विशुद्धो दीप्तिमानात्मा व्याप्नोति भुवनत्रयम् ।। १६ ।।
क्रान्तदर्शी मनीषी सः स्वयम्भूः सर्वशक्तिमान् ।
संविष्टः सर्वभूतेषु स्वशक्त्या सर्ववित् सदा ।। १७ ।।
आदिकालादनादिश्च दधौ सृष्टिं यथार्थतः ।
ददौ वेदं समस्तं च वस्तुजातं सनात् स नः ।। १८ ।।

बिना शरीर वाला, घाव आदि से रहित, पाप शून्य, नाड़ी जाल से न घिरा हुआ, पवित्र, दीप्ति वाला आत्मा तीनों भुवनों को व्याप्त करता, है ।१६। सूक्ष्मदर्शी, मननशील, स्वयम्भू, सर्वशक्तिमान्, सर्वज्ञ वह, अपनी शक्ति (और महिमा) से सब भूतों (प्राणियों और वस्तुओं) में प्रविष्ट है, सब कुछ उसी में स्थित है ।१७। अनादि वह, आदि काल से सृष्टि को यथार्थ रूप में धारण किये हुए है, सनातन उस (प्रभु) ने, चारों वेदों और समस्त वस्तुओं को (हमारे कल्याण के लिये) हमें प्रदान किया है ।१८।

अविद्या भौतिकं ज्ञानं प्रवदन्ति विचक्षणाः ।
तामेकां ये हि सेवन्ते तमोऽन्धं प्रविशन्ति ते ।। १६ ।।
सर्वमाध्यात्मिकं ज्ञानमिह विद्या निगद्यते ।
तां चैव यो हि सेवेत तमोभाक् सोऽधिकं भवेत् ।। २० ।।

विद्वान् पुरुष भौतिक ज्ञान को ही अविद्या कहते हैं, जो लोग केवल उसी का सेवन करते हैं । वे (दुःख रूप) अन्धकार में प्रविष्ट होते हैं ।१६। आध्यात्मिक ज्ञान को इस लोक में विद्या कहा जाता है, जो केवल उस (विद्या) का सेवन करता है वह और भी अधिक (दुःख रूप) घने अन्धकार को भोगता है ।२०।

विद्यया केचिदत्राहुरात्मप्राप्तिं विपश्चितः ।
अविद्यया परे धीरा निगदन्ति च त्वतः ।। २१ ।।

द्वयोरपि गुणः कार्यं क्षेत्रं भिन्नं न संशयः।
सेव्यं तथापि लोकेन, द्वितयं वै हितावहम् ॥ २२ ॥
विद्यां तथाप्यविद्याञ्च यो वेद मतिमान्नरः।
मृत्युं सोऽविद्यया तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते ॥ २३ ॥

कुछ विद्वान् विद्या से आत्म-प्राप्ति (का होना) बताते हैं, अन्य धीर मनुष्य अविद्या से ही यथार्थ रूप में (उसकी प्राप्ति को) कहते हैं।२१। (विद्या और अविद्या) दोनों का गुण कार्य और क्षेत्र निश्चय ही भिन्न-२ है। फिर भी मनुष्यों को उन दोनों का सेवन करना चाहिये (क्योंकि) वे दोनों ही हितकर हैं।२२। विद्या और अविद्या (दोनों) को जो मनुष्य जानता है, वह बुद्धिमान मनुष्य है (और वही) अविद्या से मृत्यु को पार कर विद्या से मोक्ष को प्राप्त करता है।२३।

एकाकि-जीवनं शास्त्रैरसम्भूतिर्निगद्यते।
यः केवलमुपासीत तां सोऽन्धतमसं व्रजेत् ॥ २४ ॥
समाजे वसतिश्चैव सम्भूतिरिह कथ्यते।
तामेव यश्च सेवेत तमोभाक् सोऽधिकं भवेत् ॥ २५ ॥

शास्त्रों में एकाकी जीवन को असम्भूति कहा जाता हैं, जो केवल उसी का सेवन करता है वह गाढ़े अन्धकार में जाता है, (अर्थात् दुःख भोगता है)। (सब के साथ मिलकर) समाज में निवास को ही शास्त्रों में सम्भूति कहा जाता है। जो केवल उसी का सेवन करता है, वह और भी अधिक घने अन्धकार में गिरता है।२५।

बुधाः केचित्तु सम्भूतिमसम्भूतिं तथापरे।
उत्कर्षसूचिकामाहुरुभयं वै हितावहम् ॥ २६ ॥
असम्भूतिञ्च सम्भूतिं द्वितयं स्वीकरोति यः।
आद्यया मृत्युत्तीर्य परयामृतमश्नुते ॥ २७ ॥

कुछ विद्वान् सम्भूति और दूसरे विद्वान् असम्भूति को उन्नति का सूचक कहते हैं, वस्तुतः दोनों ही हितकर हैं ।२६। जो मनुष्य सम्भूति और असम्भूति दोनों को अपनाता हैं, वह पहली (असम्भूति) से मृत्यु को पार करके, दूसरी (सम्भूति) में अमरत्व को प्राप्त करता है ।२७।

भौतकीमुन्नतिं कुर्वन् नरः सत्यन्न विस्मरेत् ।
यन्मुखं स्वर्णपात्रेण तिष्ठत्यापिहितं सदा ॥ २८ ॥
हे पूषन् ज्ञानलाभाय तन्मुखं त्वमपावृणु ।
त्वद्रूपं येन दृष्ट्वाहं पुष्टिं मुक्तिमवाप्नुयाम् ॥ २९ ॥

भौतिक उन्नति को करता हुआ मनुष्य (मन, वचन, कर्म से) सत्य (के आचरण) को न भूले, जिसका मुख सदा (मीठी किन्तु असत्य वाणी रूप) सोने के पात्र से ढंका रहता है ।२८। (पुष्टिदायक) हे पूषन् हमारे (कल्याण और) ज्ञान लाभ के लिये उस मुख को तू खोल दें । जिस से तुम्हारे (सुख-दायक मंगलमय) रूप को देखकर मैं पुष्टि और मुक्ति को प्राप्त करूं ।२९।

प्रजापति गुणोपेत पूषन् ! लोक-प्रकाशक ।
रश्मिपुञ्जं सुसंहृत्य तेजो-रूपं प्रकाशय ॥ ३० ॥
अहो पश्यामि ते रूपं शिवं तेजस्समन्वितम् ।
योऽसौ वै पुरुषः सोऽहमित्येवानुभवामि च ॥ ३१ ॥

प्रजापति के गुणों से युक्त, जगत् प्रकाशक ! हे पूषन् तू अपने किरण समूह को एकत्र करके अपने तेजस्वी रूप को प्रकाशित कर ।३०। अहो ! पूषन् ! मैं तुम्हारे कल्याणकारी तेजयुक्त (अद्भुत) रूप को देख रहा हूं एवं जो वह पुरुष (ब्रह्म या आत्मा) हैं, वही मैं हूं, ऐसा अनुभव कर रहा हूं ।३१।

पूर्वं वायुस्तदा ह्यग्निर्जलं च तदनन्तरम् ।
विनश्वरं शरीरं च तत ऊर्ध्वमजायत ।। ३२ ।।
अयं सृष्टिक्रमस्तस्मादोंकारं जीव त्वं भज ।
कर्मयोगिन् कृतं कर्म सततं स्मर चात्मनः ।। ३३ ।।

सबसे पहले वायु फिर अग्नि तदनन्तर जल तत्पश्चात् विनश्वर शरीर पैदा हुआ ।३२। हे कर्मयोगी जीव ! यही सृष्टि का क्रम है अतः तू ओ३म् का भजन कर और अपने किये हुए कर्मों का निरन्तर स्मरण कर ।३३।

हे अग्ने ! अग्रणी र्लोके त्वं नेता पथदर्शकः ।
वैभवाय सुमार्गेण गतक्लेशेन नो नय ।।३४।।
त्वं देव सर्वकर्माणि शुभानि चाशुभानि च ।
जानासि हृदि संविष्टो गुण-दोष-विवेचकः ।। ३५ ।।
नमो नमस्ते लोकेश अनुकम्पामिमां कुरु ।
मत्तः पापमपाकृत्य पुण्यं धेहि सदा तनौ ।। ३६ ।।

हे अग्नि रूप प्रभो ! आप इस लोक में अग्रणी हैं, जगन्नियन्ता और पथ प्रदर्शक हैं । हमें (सन्तति और धन सम्पत्ति रूप) वैभव प्राप्त कराने के लिये दुःख रहित सुमार्ग से ले चलो ।३५। गुण दोष की परख करने वाले हे देव आप (हम सबके) हृदयों में प्रविष्ट होकर, (हमारे) शुभ और अशुभ (सभी) कर्मों को जानते हो ।३६। हे जगत्पते ! आपको प्रणाम है आप मुझ पर एक कृपा करें (वह यह कि), मुझ से पाप को हटाकर (मेरे) शरीर में पुण्य को स्थापित करिये ।३७।

।। प्रतिभा हिन्दी व्याख्या समाप्त हुई ।।

इति श्री गोवर्धनलाल तनेजा महोदयस्य सूनुना सुभाष-वेदालंकारेण प्रतिभा-स्मृतौ लिखितं "ईश-काव्यम्" समाप्तम् ।

श्री गोवर्धनलाल तनेजा के पुत्र सुभाष वेदालंकार द्वारा प्रणीत ईश-काव्य समाप्त हुआ ।

ईशोपनिषद्

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्य स्विद्धनम् ।। १।।

जगत्याम्=गतिशील विशाल ब्रह्माण्ड में, यत् किम् च=जो भी, जगत्=सतत गतिमान संसार-(है), इदम् सर्वम्=यह सब, ईशा वास्यम्=शक्तिशाली शासक ईश्वर द्वारा बसने योग्य, आच्छादित करने योग्य, थामने योग्य (है), तेन त्यक्तेन=उस ईश्वर से प्रदत्त, (वस्तु समूह) का दान करते हुए, भुञ्जीथाः=भोग करो, कस्य स्वित् धनम् मा गृधः=किसी के धन का लालच मत करो, अथवा लोभ को छोड़ दो, धन तो किसी का नहीं उस प्रभु का है ।१।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतम् समाः ।
एव त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ।। २ ।।

इह=इस संसार में, कर्माणि कुर्वन् एव=कर्मों को करता हुआ ही (मनुष्यः शतं समाः जिजीविषेत्=सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करे, एवं=इस प्रकार, त्वयि=तुझ में इतः अन्यथा न अस्ति=इससे अच्छा दूसरा मार्ग नहीं है. नरे=पुरुषार्थी मनुष्य में, कर्म न लिप्यते=कर्म लिप्त नहीं होता अथवा उद्योगी पुरुष कर्म में आसक्त न होता ।२।

असुर्या नाम ते लोकाः अन्धेन तमसावृताः ।
तांस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः ।। ३ ।।

असुर्याः नाम ते लोकाः=आसुर लोक वे हैं, (जो) अन्धेन तमसा आवृताः=अन्धा कर देने वाले, गाढ़े अन्धकार से घिरे हुए हैं, तान्=उनको, प्रेत्य ते अभिगच्छन्ति=मरणोपरान्त वे लोग प्राप्त करते हैं, ये के च=जो कोई, आत्महनः जनाः=आत्मशक्ति का हनन करने वाले मनुष्य हैं ।३।

अनेजदेकं मनसो जवीयो नैनद्देवा आप्नुवन् पूर्वमर्षत् ।
तद्धावतोऽन्यानत्येति तिष्ठत्तस्मिन्नपो मातरिश्वा दधाति ।४।

अनेजत्=न गति करता हुआ, एकं मनसः जवीयः=एक (वह ईश) मन से भी अधिक वेग वाला है,एनत्=इसको,

देवा न आप्नुवन=देवता और विद्वान् लोग प्राप्त नहीं कर सके अथवा जान नहीं पाये, पूर्वम् अर्षत्=वह पहले ही गया हुआ या पहुँचा है, अथवा पूर्वम् अर्षत् एनत् देवाः न आप्नुवन्=सबसे पहले होने वाले ज्ञानी लोग इस देव को जान नहीं पाये, तत तिष्ठत्=वह ठहरा हुआ (भी), धावतः अन्यानत्येति=दौड़ते हुए दसरों को लांघ जाता है, मातरिश्वा=वायु, तस्मिन् अपः दधाति=उसमें कर्मों को धारण करता है ।४।

तदेजति तन्नैजति तद् दूरे तद्वन्तिके ।
तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सवस्यास्य बाह्यतः ॥ ५ ॥

तत्=वह, एजति=गति करता है, तत् न एजति=वह गति नहीं करता, तत् दूरे=वह दूर है, तत् उ अन्तिके=वह पास है, तत् अस्य सर्वस्य=वह इस समस्त जगत के. अन्त = अन्दर (स्थित है), तत् उ अस्य सवस्य बाह्यतः=वह इस सब जगत् के बाहर (भी स्थित) है।५।

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति ।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते ॥ ६ ॥

यः तु=जो, सर्वाणि भूतानि=सब पदार्थों अथवा प्राणियों को, आत्मनि एव अनुपश्यति=आत्मा में ही समीपता से देखता अथवा जानता है, सर्वभूतेषु च आत्मानं=और सब पदार्थों अथवा प्राणियों में आत्मा को (जानता हैं), ततः=तब (उन भूतों से), न विजुगुप्सते=घृणा नहीं करता है, अथवा अपने को छिपाता नहीं है ।६।

यस्मिन् सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद विजानतः ।
तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः ॥ ७ ॥

यस्मिन्=जिस स्थिति में, विजानतः=विशेष ज्ञान रखने वाले के लिये, सर्वाणि भूतानि=सब पदार्थ अथवा प्राणी आत्मा एव अभूत्=आत्मा ही हो गया, (हो गये), तत्र=उस स्थिति में, एकत्वम् अनुपश्यतः=(वस्तु और आत्मा में) एकता को समीप से भलीभांति देखने वाले या जानने वाले के लिये

कः मोहः=कौन सा मोह (है), कः शोकः=कौनसा शोक (है) ।७।

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरम् शुद्धमपापविद्धम् ।
कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भू र्याथातथ्यतोऽर्थान्
व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥८॥

स=वह शुक्रम्=तेज युक्त, अकायम्=शरीर शून्य, अव्रणम्=घाव रहित, अपापविद्धम्=पाप से न बिंधा हुआ, पर्यगात्=परि अगात्=सब ओर गया हुआ हैं, सर्वव्यापक है, कविः=क्रान्तदर्शी विद्वान्, मनीषी=प्रशस्त मनवाला, गम्भीर मनन करने वाला सर्वज्ञ, परिभूः=सब तरफ विद्यमान, स्वयम्भूः=स्वतः होने वाला अर्थात् अनादि (वह), शाश्वतीभ्यः समाभ्यः=शाश्वत वर्षों के लिये, सदा के लिये, अर्थान्=वस्तुओं या लक्ष्यों को, याथातथ्यतः=यथार्थ रूप में, व्यदधात्=धारण तथवा व्यस्थित करता आया है ।८।

अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते ।
ततो भूय इव ते तमो य उ विद्यायाम् रता ॥ ९ ॥
अन्यदेवाहुर्विद्ययाऽन्यदाहुरविद्यया ।
इति शुश्रुम धोराणाम् ये नस्तद्विचचक्षिरे ॥ १० ॥
विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह ।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते ॥ ११ ॥

ये=जो मनुष्य, अविद्याम् उपासते=अविद्या की उपासना करते हैं (वे) अन्धम् तमः प्रविशन्ति=अन्धा कर देने वाले (दुःखरूप) अन्धकार में अथवा तमोगुण में प्रवेश करते हैं, य उ=और जो. विद्यायां रताः=केवल विद्या में निरत हैं ते=वे, ततः भूयइव तमः=उससे भी अधिक अन्धकार में प्रविष्ट होते है ।९। विद्यया विद्या से, अन्यत्=दूसरी बात, आहुः=कहते हैं, अविद्यया अन्यत् आहुः=अविद्या द्वारा दूसरी बात कहते हैं, धीराणाम्=धीर पुरुषों के इति=इस वचन को, शुश्रुम=हम

सुनते आये हैं, ये=जो, तत् नः विचचक्षिरे=उसकी हमारे लिये व्याख्या करते आये हैं।१०। यः=जो, विद्याम् च अविद्याम् च=विद्या और अविद्या को, तत् उभयम्=उन दोनों को, सह वेद=एक साथ जानता है, वह, अविद्यया मृत्युम् तीर्त्वा =अविद्या द्वारा मृत्यु को तैरकर, पार करके, विद्याँ अमृतम् अश्नुते=विद्या द्वारा अमृत (अमरत्व) को भोगता है, प्राप्त करता है।११।

अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उ सम्भूत्याम् रताः।। १२।।
अन्यदेवाहुः सम्भवादन्यदादुरसंभवात्।
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे।। १३।।
सम्भूतिं च विनाशं च यस्तद्वेदोभयं सह।
विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा सम्भूत्यामृतमश्नुते।। १४।।

असम्भूति असम्भव=इकट्ठा न होना अर्थात् एकाकी जीवन, सम्भूति, सभव=इकठ्ठा होना, सामाजिक जीवन विनाश=अदृश्य रहना, अपने गत जीवन को सामाजिक जीवन में अदृश्य-लीनकर देना। शेष अन्वय तथा अर्थ मंत्र ९, १०, ११ के समान हैं।।१२-१३-१४।।

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
तत्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये।। १५।।

हिरण्मयेन पात्रेण=स्वर्ण के पात्र से, सत्यस्य मुखम् अपिहितम्=सत्य का मुख ढका हुआ है, पूषन्=हे पुष्टि चाहने वाले जीव. अथवा हे पुष्टि देने वाले परमात्मन्, सत्यधर्माय= सत्य को धर्म मानने वाले (मेरे लिये। दृष्टये=देखने के लिये, अथवा मेरे ज्ञान के लिये, तत्=उस मुख को, अपावृण=खोल दे अनावृत कर दे।।१५।।

पूषन्नेकर्षे यम सूर्य प्राजापत्य व्यूह रश्मीन् समूह।
तेजो यत्ते रूपं कल्याणतमं तत्ते पश्यामि
योऽसावसौ पुरुषः सोहमस्मि।। १६।।

एकर्ष=अद्वितीय ज्ञानी, अकेले गति करने वाले, यम=नियन्ता, सूर्य=प्रकाशमय अथवा ज्ञानियों के लक्ष्य रूप, प्राजापत्य=प्रजापति के गुणों से युक्त, पूषन्=हे पुष्टि देने वाले देव रश्मीन् व्यूह=किरणों को हटा दे, तेजः समूह=तेज को, एकत्र (केन्द्रित) कर दे, यत्ते कल्याणतमं रूपम=जो तुम्हारा कल्याणकारी रूप हैं, ते तत्=तेरे उस रूप को, पश्यामि=मैं देख रहा हूं, यः असौ पुरुषः स अहमस्मि=जो वह-पुरुष है, वह मैं हूं, (ऐसा अनुभव करता हूं) ।।१६।।

वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तम् शरीरम् ।
ओ३म् क्रतो स्मर कृतं स्मर क्रतो स्मर कृतं स्मर ।।१७।।

वायुः=वायु प्राण, अनिलम्=सर्व व्यापक वायु, प्राण (में लीन हो जाता है, अथ इदम् अमृतम्=और यह अमरत्व, (आत्मा) अमर और अविनाशी है शरीरम=शरीर, भस्मान्तम =अन्तोगत्वा भस्म ही जाने वाला है, क्रतो=हे विविध कर्म करने वाले, (जीवात्मा), ओ३म् स्मर=ओ३म का स्मरण कर, कृतम् स्मर=किये हुए को स्मरण कर, क्रतो स्मर, कृतम् स्मर =हे विविध कर्म करने वले, (जीवात्मा) स्मरण कर, किये हुए को स्मरण कर ।।१७।।

अग्ने नय सुपथा रायेऽस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्ति विधेम ।१८।

अग्ने=हे अग्रणी पथ प्रदर्शक अग्नि, अस्मान्=हमको, सुपथा राये नय=अच्छे मार्ग से ऐश्वर्य प्राप्ति के लिये ले जाओ, देव=हे दिव्य गुणयुक्त, विश्वानि वयुनानि विद्वान्=(तू) सब कर्मों को जानता है, अस्मत्=हमसे जुहुराणम् एनः=कुटिल पाप को, युयोधि=पृथक् कर, ते=तेरे लिये, भूयिष्ठाम्=सबसे अधिक, नमः उक्ति विधेम=नमस्कार करते हैं, प्रणाम करते हैं ।।१८।।

ईशोपनिषद तथा प्रतिभा-भाषा टीका समाप्त हुई
।। समाप्तश्चायं लघुग्रन्थ ।।

अलंकार-प्रकाशन जयपुर

के अन्य प्रकाशन

१. **कल्हणस्य राजतरंगिण्यां**
चित्रिता भारतीय-संस्कृतिः (शोध प्रबन्ध) प्रेस में

२. **हिन्दी राजतरंगिणी** २-५०
प्रथम तरंग का हिन्दी अनुवाद तथा विस्तृत भूमिका सहित

३. **संस्कृत—सोपानम्** १-३०
परीक्षोपयोगी व्याकरण-शब्द-धातु रूप-कोष-पत्र-निबन्धयुक्त

४. **ईश—काव्यम्** १-००
ईशोपनिषद् के मंत्रों का संस्कृत पद्यों में अनुवाद, तथा मंत्र व पद्यों की हिन्दी व्याख्या

५. **संस्कृत-निबन्ध-पारिजातः** ३-५०
प्रवेशिका, मध्यमा, टी.डी.सी., शास्त्री, आचार्य, बी.ए., एम.ए. कक्षाओं के लिये उपयोगी

★

प्राप्ति स्थान

- **इन्डो-बर्मा प्रिन्टर्स**
  आदर्श नगर, जयपुर-४
- **अलंकार प्रकाशन जयपुर**
  ७४ तनेजा ब्लाक, आदर्श नगर, जयपुर-४

प्रमुख वितरक
मलिक एण्ड कम्पनी
चौड़ा रास्ता
जयपुर